



॥ओ३म्॥



सत्यार्थ

वैदिक मोहन आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार

बृहस्पतिवार, 15 जून 2023

मासिक — 1 जून से 30 जून 2023 तक

आंतरिक परिसंचरण

समाचार पत्रिका प्रथम संस्करण



पद्मश्री विभूषित, आर्य रत्न
डॉ० पूनम सूरी जी
प्रधान, वैदिक मोहन आश्रम
भूपतवाला, हरिद्वार

वेदों का संरक्षण

संस्कृत्यते अनया सा संस्कृति

वैदिक व्युत्पत्ति के आधार पर जिस जीवन पद्धति से आत्मा सुसंस्कृत होती है वही पूर्ण विकसित हो सकती है और उसके अन्तः से राग-द्वेष, मोह-मत्सर आदि विकास निर्मूल होकर गुण संपन्न एवं प्रकाशमान हो उठते हैं। इस दृष्टि से वैदिक संस्कृति न केवल मानव के भौतिक एवं लौकिक जीवन को समृद्ध तथा सुखद बनाती है अपितु उसके आध्यात्मिक एवं पारलौकिक जीवन को भी प्रशान्त एवं आनन्दमय बनाने में प्रकाश स्तंभ का कार्य करती है। वैद जन्मा संस्कृति अर्थात् जिसमें संस्कारों का योगदान हो, उसे ही हम सुसंस्कृति कह सकते हैं। वैदिक संस्कार परम्परागत होने के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी मानव को प्राप्त होते रहते हैं। संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार होता है। हमारी वैदिक संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर आधारित है और शाश्वत है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस अद्वितीय संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित कैसे किया जाए? इसके लिए आवश्यक है कि बुजुर्ग अपनी परंपरा, वाणी संपदा, करणी संपदा को युवाओं के हाथों में अपने हाथों से सौंपे। बुजुर्ग, युवान का मार्ग प्रशस्त करें, जिससे युवाओं में अपनी वेदों की संस्कृति, अपनी परंपरा

के प्रति सम्मान का भाव जागृत हो। सीखने का उत्साह व्यक्ति को आत्मविश्वासी के साथ-साथ जिम्मेदार भी बना देता है। बुजुर्ग भौतिकता और आध्यात्मिकता में संतुलन कायम करना सिखाते हैं। वे ही परिवार में शांति के उपाय, लोक व्यवहार, रीति-नीति आदि के बारे में सद्गुण विकसित करने में सहायक होते हैं और वेदों में तो कहा गया है कि बुजुर्ग ही संस्कारों की नींव रखते हैं। हम ऋणी हैं, महान व्यक्तित्व के धारक ऋषिवर देव दयानंद के, जिन्होंने आर्य समाज के प्रकाशवान प्रांगण में वेद रूपी कल्पवृक्ष को अपनी नवीन सोच से सींचा और अपनी आने वाली पीढ़ी को ज्ञान सुधा रस का पान कराया। आर्य समाज की गतिमान विचारधारा, जिसने प्रत्येक कुरीति का खंडन किया, ऐसी विचारधारा का चलायमान रहना अत्यावश्यक है। यह उत्तरदायित्व हम सबका है। डी.ए.वी. संस्था को दो कमरों से 950 संस्थाओं में परिवर्तित करने में त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी एवं अन्य सहयोगी महापुरुषों ने अभूतपूर्व योगदान प्रदान कर हम पर उपकार किया। यह अनुपम संस्था प्राचीन एवं अर्वाचीन काल के संस्कारों से जोड़ने के लिए सेतु के समान सुगम मार्ग निर्मात्री है एवं संकल्पबद्ध है। इसी श्रृंखला में वैदिक मोहन आश्रम, ने एक छोटी सी पहल की है जिसके माध्यम से वे चाहते हैं कि हमारा समाज वेदों से जुड़े क्योंकि वेद शाश्वत हैं। एक मात्र वेद ही हमें वर्तमान युग में सही मार्ग दर्शन प्रदान कर सकते हैं।

वैदिक मोहन आश्रम के द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों, यज्ञों, उपदेशों का आयोजन किया जाता है। वेदों की सोच को जनमानस तक पहुँचाने के लिए मासिक समाचार पत्रिका 'सत्यार्थ' का प्रकाशन कर उन्होंने समाज को एक नई दिशा प्रदान करने की पहल की है। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि आर्य समाज की सकारात्मक, उत्साहवर्द्धक, लक्ष्यबद्ध विचारधारा द्वारा जनकल्याण हो। आपके उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभेच्छा तथा शुभाशीष।

संपादक : डॉ० पूनम सूरी जी

सह-संपादक : डॉ० वी. सिंह



चलो वेदों की ओर

सं गच्छध्वम् सं वद्धवम्

साथ चलें मिलकर बोलें, उसी सनातन मार्ग का अनुसरण करें, जिस पर वेद चलने के लिए हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं। वैदिक परिष्कृत संस्कार व्यक्ति को जीवन का आधार प्रदान करते हैं। संस्कृति परंपराओं से, विश्वासों से, जीवन की शैली से, आध्यात्मिक पक्ष से, भौतिक पक्ष से, निरंतर जुड़ी है। यह हमें जीवन के वास्तविक अर्थ से संबद्ध करती है। जीवन जीने की सकारात्मक सोच प्रदान करती है। एक ओर मानव संस्कृति का निर्माता होता है, वहीं दूसरे अर्थों में देखें तो संस्कृति मानव को मानव बनाती है। और अगर हम वैदिक संस्कृति की बात करें तो वही एक मात्र एक ऐसी संस्कृति है जो व्यक्ति के दृष्टिकोण को विकसित करती है। वेदों की संस्कृति आध्यात्मिकता की अमर आधारशिला पर स्थित है। एक इकाई के रूप में व्यक्ति जब सदाचरण की ओर उन्मुख होता है और कटिबद्ध रूप से उस पथ पर चलता है और दूसरों को प्रेरित कर मार्गदर्शन देता है, तो वह आचरण सुसंस्कृति का रूप ले लेता है। वर्तमान युग तक आते-आते हमारी संस्कृति ने कई रूपों को अपनाया है। परिवर्तन भी आए हैं, जो आवश्यक भी थे। समय के साथ बदलाव समय की ही मांग होती है, अन्यथा वह रूढ़िवादिता कहलाती है। परिवर्तन के साथ भी शाश्वत वैदिक संस्कृति की शान यथावत है। आवश्यकता है तो युवाओं को सजग और सचेत होने की। परिवर्तन अनिवार्य होता है, लेकिन

वैदिक संस्कृति तो शाश्वत ही है। युवा वर्ग सामने आकर अपनी संस्कृति को गौरवान्वित करने का प्रण लें तो वैदिक संस्कृति की अविरल धारा निरंतर गतिशील रहेगी। वेदों के प्रचार प्रसार में वैदिक मोहन आश्रम का योगदान अभूतपूर्व है। जो अनुशासन, आत्मविश्वास स्वाभिमान, कर्तव्यपरायणता, विवेकशीलता जैसे गुणों को अंगीकार करता है। और जनमानस तक पहुँचाने का कार्य भी करता है। समय-समय पर सामान्य जन अपनी संस्कृति से पहचान करें यही आश्रम का मुख्य लक्ष्य होता है। इसी उपलक्ष्य में वह कई कार्यक्रमों का आयोजन भी करता रहता है। ये कार्यक्रम जनमानस के आमूलचूल परिवर्तन में सहायक सिद्ध होते हैं। एक बार व्यक्ति अपनी संस्कृति से जुड़ जाता है तो वही आने वाले कल का निर्माता भी बन जाता है। वैदिक मोहन आश्रम सदैव इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है और वेदों की सोच को जन-जन तक पहुँचाने के लिए समाचार पत्रिका 'सत्यार्थ' का प्रकाशन कर उन्होंने जो पहल की है उसके लिए मैं उन्हें हृदय से मंगल कामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

डॉ० वी. सिंह

सचिव, वैदिक मोहन आश्रम
भूपतवाला हरिद्वार



सङ्गतिकरणम्

वेद व्याख्यान एवं भजन संध्या

21 अप्रैल
2023

महात्मा हंसराज जी के जन्म स्मृति पर्व पर भजन संध्या का आयोजन

महर्षि दयानंद की तपस्थली एवं कर्मस्थली वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला, हरिद्वार में पाखंड खंडनी पताका के तले महात्मा हंसराज जी के 159 में जन्म स्मृति दिवस का भव्यता पूर्वक आयोजन किया जा रहा है। आयोजन की पूर्व संध्या पर वेद-व्याख्यान एवं प्रभु भक्ति रस से युक्त भजन संध्या का एक विशेष आयोजन आयोजित किया गया। इस आयोजन का विशेष नाम था, “सङ्गतिकरणम्” इस भव्य कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम देवयज्ञ से हुआ। जिसमें डीएवी प्रबंध कर्तृ समिति के सम्मानित प्रधान जी **पद्मश्री अलंकृत आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी** के नेतृत्व में बीएम डीएवी विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों ने यज्ञ का सफल आयोजन किया। इसके पश्चात “सङ्गतिकरणम्” नामक विशेष कार्यक्रम का आरंभ हुआ सर्वप्रथम मंत्रोच्चारण एवं दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ अतिथि एवं विद्वान जनों के स्वागत के पश्चात कार्यक्रम में विशिष्ट गरिमामयी उपस्थिति के

रूप आदरणीय श्री प्रधानजी रहे प्रधानजी का स्वागत वैदिक मोहन आश्रम के सचिव डॉ.वी. सिंह जी ने किया विशिष्ट अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ऊर्जावान मंत्री डॉ. विनय आर्य जी जिन्होंने आर्य समाज के विराट स्वरूप को बहुत ही सुंदर और विस्तृत रूप से ऐतिहासिक रूप से प्रस्तुत किया और आर्य समाज के व्यापक स्वरूप से आर्य समाज के विभिन्न गतिविधियों से सबको परिचित करवाया। पश्चात आर्य जगत के उद्भट विद्वान अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आदरणीय डॉ. वागीश जी का सारगर्भित व्याख्यान संपन्न हुआ, जिसमें उन्होंने सरलता से संगतिकरणम् की व्याख्या सबको समझाई, और कहा कि संगतिकरणम् का अर्थ है जहां जाकर के सब लोगों की गति ठीक हो जाती है और ठीक गति से ही प्रगति हो सकती है, समभाव के साथ संगठन के साथ मिलकर के हम श्रेष्ठ कार्य को जब संपन्न करते

हैं, तो वह कार्य सबके लिए अनुकरणीय बन जाता है। वैदिक मोहन आश्रम की प्रबन्धिका डॉक्टर अल्पना शर्मा जी ने सभी आगंतुक अतिथियों विद्वज्जनों का वाचिक स्वागत किया। इस आयोजन में देश के विभिन्न डीएवी विद्यालयों से शिक्षक-शिक्षिका एवं प्रधानाचार्य गण पधारे हुए थे। कार्यक्रम बहुत ऊर्जा के साथ और विश्वास के साथ, नवनवीन संकल्पों के साथ संपन्नता की ओर आगे बढ़ा और बाद में वैदिक मोहन आश्रम के अधीनस्थ संचालित बीएम डीएवी विद्यालय की प्रधानाचार्या जी ने उन्मुक्त भाव से सभी आगंतुक अतिथियों का सभी प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों शिक्षिकाओं, छात्र छात्राओं का आभार प्रकट किया।

शांति पाठ के साथ यह विशेष
कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सत्यार्थ...



जून 15, 2023

सङ्गतिकरणम्

वेद व्याख्यान एवं भजन संध्या

21 अप्रैल
2023



सत्यार्थ...



जून 15, 2023

सङ्गतिकरणम्

21 अप्रैल
2023

वेद व्याख्यान एवं भजन संध्या





समर्पण दिवस | 22 अप्रैल 2023

महात्मा हंसराज जी के पावन जन्मोत्सव के उपलक्ष में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी प्रबंधकत्री समिति के द्वारा डीएवी सेंटेंनरी पब्लिक स्कूल, जगजीतपुर में समर्पण दिवस का आयोजन भव्यता और दिव्यता के साथ सकुशल संपन्न हुआ। स्कूल में आयोजित वैदिक महा कुम्भ में दस हजार से अधिक गणमान्यों की गौरवमयी उपस्थिति ने स्वामी दयानंद के विचारों को आत्मसात कर वेदों के प्रचार का संकल्प लिया।

इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी प्रबंधकत्री समिति के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी, डीएवी कॉलेज प्रबन्धकत्री समिति के उपप्रधान, निदेशक, क्षेत्रीय निदेशक, देश के विभिन्न राज्यों से आए 948 से अधिक डीएवी शिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्य तथा गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अक्षय तृतीया के पर्व पर वैदिक यज्ञ के साथ महात्मा हंसराज जी के पावन जन्मोत्सव के कार्यक्रम का आगाज हुआ।

परम श्रद्धेय आर्य रत्न, प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी प्रबंधकत्री समिति, पद्मश्री डॉ० पूनम सूरी जी तथा उनकी पत्नी श्रीमती मणि सूरी जी का माल्यार्पण कर और पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात् उन्होंने यजमान के पद पर आसीन होकर यज्ञ ज्योति को प्रकाशित किया।

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। डीएवी हरिद्वार, डीएवी देहरादून तथा बी.एम. डीएवी हरिद्वार के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं ने 'चमका जहाँ में तू बनकर अटल सितारा' भजन प्रस्तुत किया। समस्त जनसमूह ने डीएवी गान, डीएवी जय-जय के सुर में सुर मिलाए।

डॉ० सूरी ने उपस्थित सन्यासियों स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी चित्पेश्वरानन्द, स्वामी केवलानन्द, स्वामी सच्चिदानन्द, स्वामी

करमवीर, श्री सत्येन्द्र जी परिव्राजक, सुश्री कंचन आर्या, अचार्या मैत्रेयी, अचार्य वेदाकर तथा सभी गणमान्य लोगो का समृद्धि सूचक पौधा, स्मृतिचिह्न तथा सम्मान राशि देकर सम्मानित किया।

उक्त कार्यक्रम में श्री सोमनाथ सचदेवा, कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं महामंत्री महासचिव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, श्री विनय आर्या जी को विशिष्ट सम्मान से सम्मानित कर उन्हें शाँल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

डीएवी विद्यालयों के प्रधानाचार्य प्रो० रमा शर्मा, श्रीमती सिम्मी जुनेजा, श्रीमति समीक्षा शर्मा एवं श्री अरूण आर्या जी को शिक्षा तथा सामाजिक क्षेत्र में योगदान के लिए उन्हें विशिष्ट सम्मान स्वरूप शाँल, प्रशस्ति पत्र एवं मेडल से सम्मानित किया गया।

डॉ० पूनम सूरी जी ने "हे प्रभु दुर्गुण मेरे हर लीजिए" भजन के माध्यम से ईश्वर से दुर्गुणों को दूर कर शुभ गुण देने की प्रार्थना की।

डॉ० सूरी जी ने समस्त जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि वेदों के ज्ञान का प्रकाश ही भारत को विश्व गुरु बनाएगा, दयानंद के विचारों को घर-घर पहुंचाना डीएवी का उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि डीएवी संस्था शिक्षा, संस्कृति व संस्कारों को देने का कार्य कर रही है और वैदिक मूल्यों को डीएवी वैदिक मूल्यों को साथ लेकर चलती है। विद्या पर धर्म का अंकुश नहीं होना चाहिए। योगाभ्यास के साथ वेद प्रचार का काम अनवरत जारी रहना चाहिए। भारत को विश्व गुरु बनाने में भारतीय संस्कृति और संस्कारों को देने का कार्य डीएवी कर रहा है। जब तक आर्य समाज के सिद्धांतों और विचारों को युवा पीढ़ी को नहीं देंगे तब तक हमारा देश सोने की चिड़िया नहीं बन सकता। वेद के माध्यम से हम वायुयान बना सकते हैं लेकिन हमारा मकसद लोगो के चरित्र को उज्ज्वल बनाना है।

धर्म कोई संप्रदाय नहीं है, धर्म कर्तव्य है नियम है, बच्चों को कर्तव्य का ज्ञान दो ताकि वह राष्ट्र निर्माण में और भारत को विश्व गुरु बनाने में अपना योगदान दे सकें। डीएवी का हर शिक्षक धर्म शिक्षक है। तप का असली अर्थ है - हर हाल में गरीबी-अमीरी, आंधी और तूफान में कर्म करना। यज्ञ तथा वेद प्रचार का कार्य अनवरत जारी रहना चाहिए। डीएवी संस्था के प्रधानाचार्य कर्म कर रहे हैं तभी डीएवी संस्थाएं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उक्त वक्तव्य देते हुए डॉ. पूनम सूरी जी ने दर्शकों को संबोधित किया। महात्मा हंसराज जी द्वारा किराए के दो कमरों से शुरू हुए डीएवी के कार्य की पताका आज पूरे विश्व में लहरा रही है। इस अवसर पर आर्य जगत और आर्य हेरिटेज पुस्तको का विमोचन विमोचन भी किया गया।

प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा, कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय एवं श्री विनय आर्य महासचिव आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली को विशिष्ट सम्मान से अलंकृत किया गया। स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ ने अपने आशीर्वचनों की वर्षा की।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण महात्मा हंसराज जी के जीवन चरित्र को उभारता तात्कालिक परिस्थितियों के बीच देशभक्ति की भावना के साथ-साथ एक सुदृढ़ समाज तथा सुदृढ़ संकल्प व समर्पण भाव की नींव रखता कार्यक्रम, सांस्कृतिक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। इस नाटिका को डीएवी हरिद्वार, डीएवी देहरादून व बीएम डीएवी, हरिद्वार के 1000 विद्यार्थियों ने मंच पर एक साथ उत्साहपूर्वक प्रस्तुत किया। इसमें महात्मा हंसराज जी के जीवन संघर्ष, सामाजिक सेवा, देशभक्ति और स्वामी दयानंद जी के सपनों को साकार करने के लिए महात्मा जी के समर्पण एवं त्याग को प्रस्तुत किया गया।

सत्यार्थ...



जून 15, 2023

समर्पण दिवस

22 अप्रैल
2023



सत्यार्थ...



जून 15, 2023

समर्पण दिवस

22 अप्रैल
2023

